वर्ष 1, अंक 6, नवंबर–दिसंबर 2012

गुब्बारा

बच्चों का अपना अखबार

बाल दिवस विशेषांक

नेहरु चाचा तुम्हें सलाम

नेहरू चाचा तुम्हें सलाम
अमन–शांति का दिया पैगाम

जग को जंग से बचाया
हम बच्चों को भी मनाया

जन्मदिवस बच्चों के नाम
नेहरू चाचा तुम्हें सलाम

देश को दी हैं योजनाएँ
लोहा और इस्पात बनाए

बांध बने बिजली निकाली
नहरों से खेतों में हरियाली

प्रगति का दिया ईनाम
नेहरू चाचा तुम्हें प्रणाम

डाक भेजने के लिए लिफाफे पर डाक टिकट लगाना अनिवार्य है। विभिन्न देशों के डाक विभाग अपने देश के मुद्दों, महापुरुषों की बातों को और महत्वपूर्ण संदेशों को डाक टिकट के माध्यम से प्रदर्शित करते है, परन्तु चाचा नेहरु एक ऐसी शाख्सियत थे जिनहें विदेशों की डाक टिकट में भी उतनी ही प्रमुखता से प्रदर्शित किया गया जितना की अपने देश में। बाल दिवस पर उनकी यात्रा को प्रदर्शित करती कुछ डाक टिकट आपके लिये।

बालश्रम और बाल तस्करी की रोकथाम के लिए सख्त हुआ कानून

18 साल के किसी भी बच्चे से मजदूरी कराना गैरकानूनी दोषियों पर लगेगा 20 हजार रुपये का जुर्माना, होगी जेल

राजस्थान सरकार ने बच्चों को मजदूरी और बच्चों से काम करवाने के लिए उन्हें दूसरे शहर में ले जाना (जिसे बाल तस्करी भी माना जाता है) जैसी घटनाओं को रोकने के लिए सख्त कानून बनाया है। अब बाल श्रमिको से मजदूरी करवाने पर दोषी व्यक्ति को 20 हजार रुपये का जुर्माना भरना होगा। यही नहीं उसे न्यायालय से भी सजा मिलने का प्रावधान है।इस नए कानून के अनुसार अब बालकों की आयु 14 वर्ष से बढ़ाकर 18 वर्ष कर दी है। इसका मतलब है कि अगर कोई व्यक्ति 18 वर्ष से कम आयु के बच्चों से मजदूरी करवाता है तो वह दोषी माना जाएगा। बाल अधिकार के तहत 18 वर्ष तक की आयु का व्यक्ति बालक की श्रेणी में आता है।

असंगठित क्षेत्र के उद्यमों के लिए बने राष्ट्रीय आयोग ने 2007 में अपनी रिपोर्ट में यह बात कही थी कि अगर कोई बच्चा स्कूल से बाहर रहता है तो उसे मजबूरन कार्य करना पड़ता है। इस दौरान उनसे मजदूरी करवाना, उनको प्रताड़ना देना और उनकी तस्करी होने जैसी घटनाओं की आशंका बहुत ज्यादा रहती है। राजस्थान बाल अधिकार संरक्षण आयोग के अनुसार राज्य के विभिन्न क्षेत्रो में बड़ी संख्या में 18 वर्ष से कम उम्र के बच्चे विषम परिस्थितियो में कार्य कर रहे हैं। यह बच्चे नगीना घिसाई, आरी-तारी, कालीन बनाने, ईट भट्टे, घरेलू नौकर, कचरा बिनने, चाय थड़ियो और ढ़ाबे पर काम करते हैं। इसके अलावा कई बच्चे भीख भी मांगते हैं। कई बच्चों को बी.टी. कॉटन और अन्य तरह की मजदूरी के लिए राजस्थान से बाहर लेकर जाता है। इनको बंधुआ मजदूर बनाकर लगभग 10 से 16 घंटे मजदूरी कराई जाती है। बच्चों की शिक्षा में बाल मजदूरी एक बडी अड़चन है।

बाल मजदूरी की सूचना मिलने पर कोई भी व्यक्ति या बच्चा, चाइल्डलाइन-1098 पर फोन कर चाइल्डलाइन को इसकी सूचना दे सकता है। बाल मजदूरी का पता लगने पर 100 नंबर पर फोन कर पुलिस को भी इसकी जानकारी दी जा सकती है। नए कानून में स्थानीय पुलिस और बाल कल्याण समिति के माध्यम से 24 घंटे के अंदर कार्यवाही कर बाल मजदूर को मुक्त कराया जाएगा। अगर मामला श्रम अधिकारी के पास आता है तो अधिकारी को बाल मजदूर को तत्काल संबंधित बाल कल्याण समिति के समक्ष प्रस्तुत किया जाना अनिवार्य है।

राज्य सरकार की तरफ से उस बच्चे के पुर्नवास के लिए 5000 रुपये की राशि बाल श्रमिक कल्याण कोश में जमा कराई जायेगी। यह पैसा उसके पुर्नवास जैसे स्कूल में दाखिला, नए कपड़े, किताब, देखरेख आदि पर खर्च किया जायेगा।

नाटक के माध्यम से भ्रष्टाचार पर चेताया

उरमूल सीमांत समिति, बज्जू में 26 दिसंबर से 4 जनवरी तक एक नाट्य कार्यशाला का आयोजन किया गया। कोलायत के विभिन्न गांवों से आये 16 बच्चों ने इस नाट्य कार्यशाला के माध्यम से 10 दिन बज्जू में रहकर नाटक और उसकी तैयारी का प्रशिक्षण प्राप्त किया। बीकानेर के प्रसिद्ध नाटककर्मी अशोक जोशी ने यहां बच्चों को फेस मेकअप, मुखौटे बनाना, नाटक के लिए कपड़ों का चयन करना जैसी बारिकीयों से अवगत कराया। वहीं नाटक के दूसरे प्रशिक्षणदाता विपिन उपाध्याय ने नुक्कड़ नाटकों में भीड़ इक्कठा करने, नाटक के ही स्थान पर मौजूद चीजों को ही नाटक के काम में लेना और वहीं की बोली में मशहूर बातों को ज्यादा जोर से बोलने जैसी बातों को सिखाया। सभी ने मिलकर भ्रष्टाचार पर एक नाटक भी तैयार किया। नाटक की कहानी के अनुसार एक बार एक क्षेत्र में अकाल पड़ा तो जनता राजा से मदद के लिए राजधानी पहुंची, लेकिन संत्रियों और मंत्रियों की जेब भरते-भरते वह खुद खाली हो गए। इस नाटक को कोलायत के ग्रामीणों के समक्ष प्रस्तुत कर उन्हें भ्रष्टाचार का विरोध करने के लिए जागरुक किया गया।

बच्चों ने मनाई जिला कलेक्टर के साथ दीवाली

कोलायत तहसील के खिन्दासर, भेलू, खजोड़ा, दासौड़ी, खिखानिया पट्टा और खिखानिया कुण्डलियान गांव के बच्चों ने बीकानेर जिला कलेक्टर आरती डोगरा के साथ दीवाली मनाई।

दरअसल, दीवाली से तीन दिन पहले 11 नवंबर को जिला कलेक्टर को खिन्दासर गांव की पंचायत समिति में आना था। खिन्दासर के किशोरी प्रेरणा मंच को इसका पता चल गया। उन्होंने इसके लिए पहले से ही तैयारियां शुरु कर दी। किशोरी प्रेरणा मंच की सदस्यों ने इसकी खबर सभी आंगनबाड़ी केन्द्र पर दे दी। सबके माता-पिता से कह दिया गया कि 11 तारिख को दीवाली कलेक्टर मैडम के साथ मनायेंगे। इसलिए सभी नए-नए कपड़े पहनकर वहां आये। किशोरी प्रेरणा मंच की सदस्यों ने जैसा सभी को कहा था वैसा ही हुआ। 11 तारिख को लगभग नए कपड़े पहनकर करीब 200 बच्चे और गांव के लोग राजीव गांधी केन्द्र पर इक्कठा हो गए। जैसे ही कलेक्टर मैडम वहां पहुंची बच्चों ने जोरदार तालियों के साथ उनका स्वागत किया। कलेक्टर मैडम यह देखकर बहुत खुश हुई।

इसके बाद बच्चों ने " सबसे प्यारा मेरा देश...सबसे प्यारा हमारा देश... गीत गया। गीत सुनकर कलेक्टर मैडम बहुत खुश हुईं। वह अपनी कुर्सी छोड़कर बच्चों के साथ नीचे बैठ गईं। उन्होंने बच्चों से कविता, गीत और कहानियां सुनी। दासौड़ी गांव की सुमन ने बताया कि उसने यह गीत आंगनबाड़ी कार्यकर्ता अणदू बाईसा से सीखा है। वह अपनी आंगनबाड़ी में हर रोज यह गीत गाते हैं। इसके बाद बच्चों को सीट दी गई। जिसमें उन्होंने चित्र बनाये। रंग भी भरे। इन चित्रों को देखकर कलेक्टर मैडम बहुत खुश हुई। उन्होंने बच्चों को बहुत सारे खिलौने और मिठाईयां दी।

किशोरी प्रेरणा मंच को मिला नेतृत्व प्रशिक्षण

समूहों को सही प्रकार से चलाने के लिए एक समझदार नेता की जरूरत होती है। नेता कैसा हो इसके लिए कोलायत के गांवों में काम करने वाले किशोरी प्रेरणा मंच की अध्यक्ष और सचिव के लिए नेतृत्व विकास प्रशिक्षण का आयोजन किया गया। इस प्रशिक्षण के माध्यम से अध्यक्ष और सचिव को सही निर्णय लेने, समूह में एकता और अखंडता बनाए रखने के बारे में विस्तार से जानकारी दी गई। प्रशिक्षण में बीकानेर के महिला सलाह एवं सुरक्षा केन्द्र से आई मंजू नांगल ने बताया कि समूह को आगे ले जाने का पूरा भार उस समूह के नेता पर होता है। उसको सोचना होता है कि वह अपने समूह को कैसे बरकरार रखे। कैसे समूह की बैठक समय-समय पर होती रहे। साथ ही समूह की बैठक के दौरान उठने वाले मुद्दे पर चर्चा कर उसको गांव में पहुंचाया जाये। यह सब करने के लिए नेता में कुछ गुण होने चाहिए जिससे वह बाकी सदस्यों को अपने साथ मिलाकर चल सके। नेता कोई भी बन सकता है लेकिन उसको निम्न बातों का ध्यान रखना आवश्यक है।

1. **प्रतिबद्धता (संकल्प)**ः– एक नेता को अपने काम के प्रति प्रतिबद्ध रहना चाहिए। किसी भी परिस्थिति में उसे अपने फायदे की न सोचकर समूह के बारे में सोचना चाहिए।

2. **अनुशासन**ः– नेता जब खुद अनुशासन में रहेगा। तो उसका समूह अपने आप अनुशासन का पालन करेगा।

3. **भरोसा**ः– नेता को अपने सभी साथियों पर भरोसा करना चाहिए। किसी एक की बातों में नहीं आना चाहिए।

4. **हिम्मत**ः– कैसी भी परिस्थिति हो एक नेता को हमेशा हिम्मत से काम लेना चाहिए। उसकी हिम्मत उसके साथियों को आत्मविश्वास देती है।

5. **सच्चाई**ः– एक नेता को हमेशा ईमानदार और सच्चा होना चहिए।

13वां राष्ट्रीय बाल आनंद महोत्सव

राजस्थान के बीकानेर जिले में 13वां राष्ट्रीय बाल आनंद महोत्सव मनाया गया। 23 नवंबर से 30 दिसंबर तक चले इस महोत्सव में भारत के 19 राज्यों से आये बच्चों ने भाग लिया। इसके साथ ही पड़ोसी देश नेपाल से भी इस महोत्सव में बच्चे आये। पूरे महोत्सव का आंखो देखा हाल आपको बता रही हैं प्रिंयका बिश्नोई

पहला दिन– महोत्सव की शुरुआत रैली के साथ हुई। बीकानेर शहर में बच्चों द्वारा रैली निकाली गई इसमें हजारों की संख्या में बच्चों ने हिस्सा लिया। अलग-अलग राज्यों से आए बच्चों का बीकानेर में भव्य स्वागत हुआ। रैली शहर में जहां-जहां गुजरी रैली पर फूलों की बारिश की गई। रास्ते में बच्चों को जगह-जगह खाद्य सामग्री भेंट की गई। रैली में शामिल त्रिपुरा, केरल, कर्नाटक आदि राज्यों से आए बच्चों से रास्ते में लोगों ने पूछा 'कठै सू आयो है बेटा' समझ में आने पर बच्चों ने अपने बीकानेरी साथी से इसका अनुवाद कराया और तपाक से जवाब दिया। वहीं एक बुजुर्ग द्वारा पूछा गया कि 'बीकानेर किसो लाग्यो' इस पर बच्चों ने कोटगेट की तरफ इशारा करते हुए कहा, बहुत अच्छा।

दूसरा दिन– दूसरे दिन बच्चों ने सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किए। इसमें सबसे लोकप्रिय 'भारत की संतान' रहा। देशभर से आए बच्चों ने कश्मीरी, उर्दू, पंजाबी, गुजराती, संस्कृत, सिंधी, असमिया, उडिया, बंगाली, मराठी, तेलगू, कोकणी, कन्नड़, तमिल, मलयालम, और हिन्दी भाषा में राष्ट्र एकता का संदेश दिया। महोत्सव के आयोजन में महत्वपूर्ण योगदान देने वाले मशहूर गांधीवादी एस.एन. सुब्बाराव ने सभी भाषाओं में गीत गाकर संबंधित राज्यों की गौरवपूर्ण बातों को बच्चों को बताया। उन्हें उनके राज्य के लोक नृत्य और पहनावे के बारे में जानकारी दी गई। देर शाम को नृत्य कार्यक्रम रखा गया। एक तरफ जहां पंजाब का नृत्य भांगड़ा देखने को मिला तो दूसरी और उत्तर प्रदेश का नृत्य कत्थक की झलक देखने को मिली। जैसे ही 'भारत की संतान' शुरु हुआ सब का ध्यान उसी की तरफ हो गया। बच्चों ने भाषा व पहनावे से पूरे भारत की संस्कृति को प्रस्तुत किया।

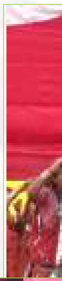

तीसरा दिन– कार्यक्रम के तीसरे बच्चों ने अपने राज्य के लोक नृत्य को प्रस्तुत किया तो राजस्थान व पंजाब से आए मूक-बधिर बच्चों ने अपने अद्भुत नृत्य से सबका मन मोह लिया। तीसरे दिन से उरमूल सीमांत समिति की ओर से बच्चों को उनके अधिकारों के प्रति जागरूक करने के लिए 'कठपुतली के नाटक' शुरू कर दिए गए। जिसका बच्चों ने भरपूर आनंद लिया।

इसके बाद बच्चों के हाथ में ब्रश व रंगों की प्लेट दे दी गई और बच्चों से उनके मन के मुताबिक चित्र बनाने के लिए कहा गया। बच्चों ने बड़ी ही शालीनता से भारत का नक्शा बनाया। एक दूसरे को देखकर बच्चों ने मानो चित्रकारी करने की होड़ सी लग गई। आयोजन स्थल में जगह-जगह बच्चे चित्रकारी करने के लिए बैठ गए।

इसके साथ-साथ सीखने सिखाने का सिलसिला भी बखूबी चल रहा था। जहां एक तरफ स्थानीय बच्चों ने केरल से आए बच्चों से मलयालम भाषा में गिनती ('उन, रंड, मुन, नाल, अंज, आर, ए, अट, अ०बट, पट') सीख रहे थे तो वहीं दूसरी तरफ केरल के बच्चे मारवाड़ी बोली की मिठास को अपना कर रहे थे।

चौथा दिन– बच्चों को बीकानेर के प्रसिद्ध स्थलों को दिखाने का कार्यक्रम चौथे दिन किया गया। सभी बच्चों को 'बजरंग धौरा' लेकर जाया गया। जहां उन्हें बीकानेरी 'लापसी और राबड़ी' परोसी गई। सभी बच्चों ने इसका भरपूर आनंद उठाया। राबड़ी खाने के बाद कुछ बच्चे बस में ही सोने लगे। 'बजरंग धौरा' से चलकर बच्चे बस में जूनागढ़ किले का भ्रमण के लिए पहुंचे। यहां बच्चों ने राजसी ठाठ बाट को पहचाना और राजाओं की वेषभूषा का अवलोकन किया। इसके बाद उन्हें दुनिया भर में प्रसिद्ध देशनोक के करणी माता मंदिर ले जाया गया। सैंकड़ों की

संख्या में बच्चों के पहुंचने पर देखते ही देखते मंदिर का माहौल बदल गया। मंदिर के प्रांगण में भी 'हम बच्चे हिस्दुस्तान के' नारा जोर से गूंजने लगा। मंदिर में काबाओं को देखकर दूसरे राज्यों से आए बच्चे पहले तो डर गए किंतु थोड़ी ही देर में साथ मित्रवत हो गए। शाम के वक्त बच्चों ने गंगाशहर स्थित आचार्य तुलसी के सामाधि स्थल के दर्शन किए।

पांचवा दिन– भ्रमण के अगले दिन बच्चों के बीच जूनागढ़ किला, बजरंग धौरा, करणी माता मंदिर, तुलसी सामाधि स्थल की चर्चा रही। कहीं कोई चूहों का जिक्र कर रहा था तो कहीं कोई बजरंग धोरे पर बिताए गए पल याद कर हंस रहा था। साथ ही दूसरी तरफ जूनागढ़ में चल रहा था कि उस तोप से एक बार में कई गोले दागे

देखी गई तोप का जिक्र भी जाते थे। पांचवे दिन बच्चों का उत्साहवर्धन करने के तालियों से गूंज उठा। एक प्रस्तुत किए गए। जिनमें पर्यावरण, सद्भावना, व बड़ों को जागरूक किया।

द्वारा तैयार सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किए गए। बच्चों लिए आयोजन स्थल के बाद एक नृत्य बच्चों ने देशभक्ति, अहिंसा के बारे में बच्चों

छठा दिन– कार्यक्रम के छठे दिन मूक-बधिर बच्चों का क्रिकेट मैच हुआ इस दौरान उन बच्चों ने खूब चौके और छक्के लगाए। यह मैच पंजाब और राजस्थान के बच्चों के बीच खेला गया। दूसरे राज्यों से आए बच्चों ने बीकानेर में बने मित्रों के साथ रहकर मारवाड़ी सीखी। नेपाल से आए हेमराज से बात की गई तो वह कुछ इस अंदाज में बोला 'अरे भाइला में नेपाल रो हूं, म्हारो नाम हेमराज है, थे सुणाओ' यह सुनकर सब चकित रह गए इससे अंदाजा लगाना मुश्किल था कि वह नेपाल का है या फिर बीकानेर का। इस तरह छठे दिन का समापन हुआ लेकिन अगला दिन महोत्सव का अंतिम दिन होने से कई चेहरे मायूस थे। उन्हें अपने नए दोस्तों को छोड़कर जाने का दुख था।

सातवां दिन– एक सप्ताह से विभिन्न राज्यों से आए बच्चों की आपस में इतनी अच्छी दोस्ती हो गई कि महोत्सव के अंतिम दिन मेहमान बच्चे जब अपने घर के लिए रवाना हो रहे थे तो बीकानेर के बच्चों की आंखों में आसू आ गया। महोत्सव के अंतिम दिन एक बार फिर से 'भारत की संतान' कार्यक्रम प्रस्तुत किया गया।

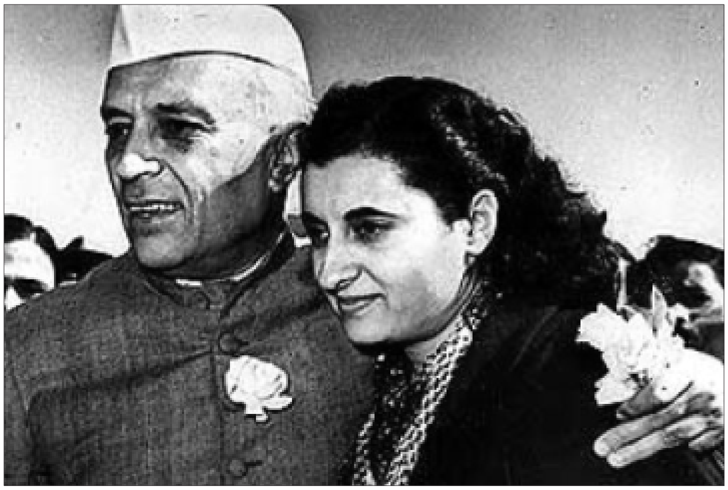

गुब्बारा के चौथे अंक में आपने पढ़ा कि किस तरह से जवाहर लाल नेहरु ने अपनी पुत्री इंदिरा को पत्र लिखकर यह बताया कि शुरु का इतिहास कैसे लिखा गया। इसी क्रम में किताब ‘‘ पिता का पत्र पुत्री के नाम’’ का तीसरा पत्र प्रस्तुत है।

जमीन कैसे बनी

तुम जानती हो कि जमीन सूरज के चारों तरफ घूमती है और चाँद जमीन के चारों तरफ घूमता है। शायद तुम्हें यह भी याद है कि ऐसे और भी कई गोले हैं, जो जमीन की तरह सूरज का चक्कर लगाते हैं। ये सब, हमारी जमीन को मिला कर, सूरज के ग्रह कहलाते हैं। चाँद जमीन का उपग्रह कहलाता है। इसलिए कि वह जमीन के ही आसपास रहता है। दूसरे ग्रहों के भी अपने-अपने उपग्रह हैं। सूरज, उसके ग्रह और ग्रहों के उपग्रह मिल कर मानो एक सुखी परिवार बन जाता है। इस परिवार को सौर जगत कहते हैं। सौर का अर्थ है सूरज का। सूरज ही सब ग्रहों और उपग्रहों का बाबा है। इसीलिए इस परिवार को सौर-जगत कहते हैं।

रात को तुम आसमान में हजारों सितारे देखती हो। इनमें से थोड़े-से ही ग्रह हैं और बाकी सितारे हैं। क्या तुम बता सकती हो कि ग्रह और तारे में क्या फर्क है? ग्रह हमारी जमीन की तरह सितारों से बहुत छोटे होते हैं लेकिन आसमान में वे बड़े नजर आते हैं, क्योंकि जमीन से उनका फासला कम है। ठीक ऐसा ही समझो जैसे चाँद, जो बिल्कुल बच्चे की तरह है, हमारे नजदीक होने की वजह से इतना बड़ा मालूम होता है। लेकिन सितारों और ग्रहों के पहचानने का असली तरीका यह है कि वे जगमगाते हैं या नहीं। सितारे जगमगाते हैं, ग्रह नहीं जगमगाते। इसका सबब यह है कि ग्रह सूर्य की रोशनी से चमकते हैं। चाँद और ग्रहों में जो चमक हम देखते हैं वह धूप की है।

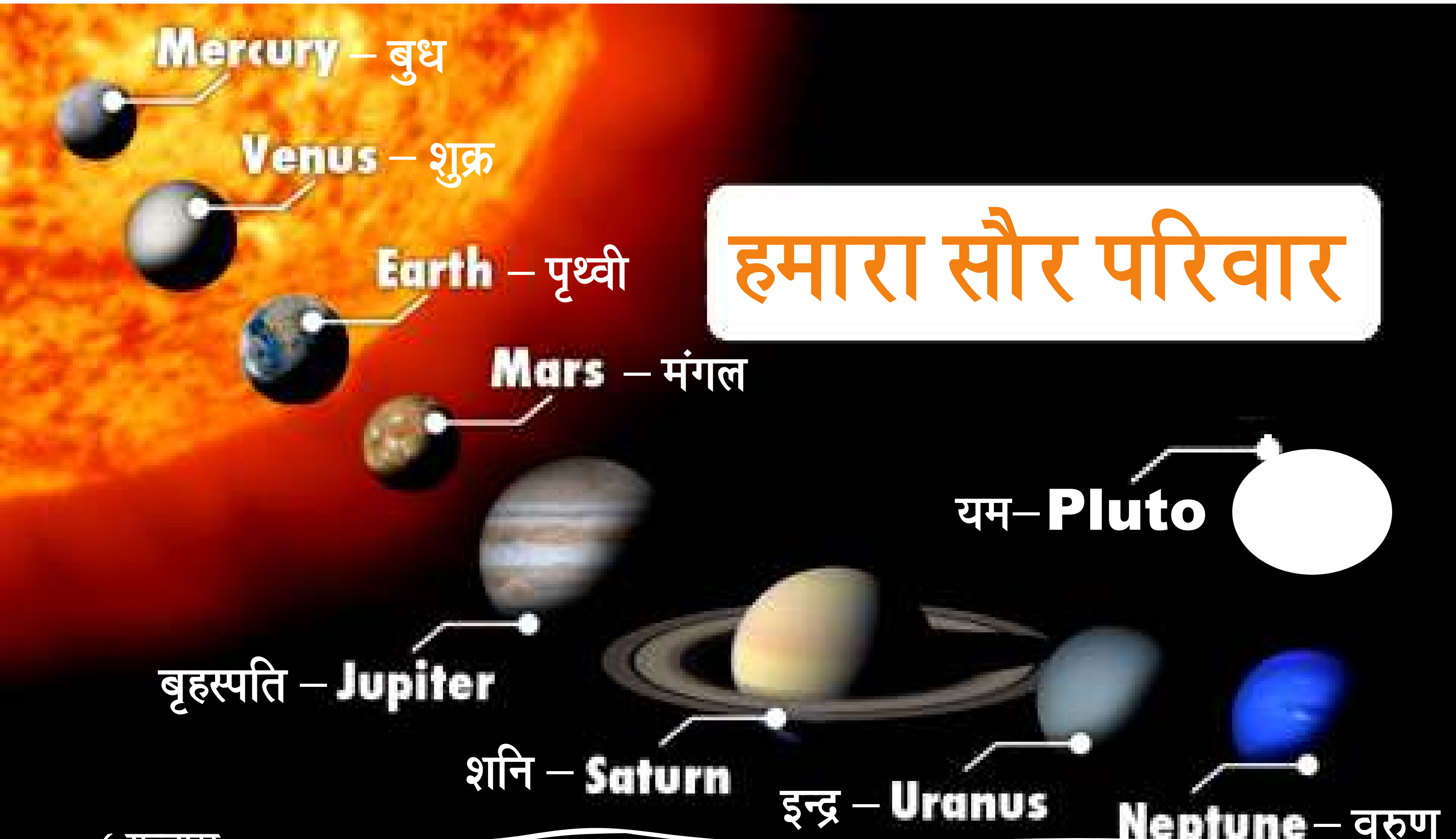

असली सितारे बिल्कुल सूरज की तरह हैं, वे बहुत गर्म जलते हुए गोले हैं जो आप ही आप चमकते हैं। दरअसल, सूरज खुद एक सितारा है। हमें यह बड़ा आग का गोला-सा मालूम होता है, इसलिए कि जमीन से उसकी दूरी और सितारों से कम है।

इससे अब तुम्हें मालूम हो गया कि हमारी जमीन भी सूरज के परिवार में सौर जगत में है। हम समझते हैं कि जमीन बहुत बड़ी है और हमारे जैसी छोटी-सी चीज को देखते हुए वह है भी बहुत बड़ी। अगर किसी तेज गाड़ी या जहाज पर बैठो तो इसके एक हिस्से से दूसरे हिस्से तक जाने में हफ्तों और महीनों लग जाते हैं। लेकिन हमें चाहे यह कितनी ही बड़ी दिखाई दे, असल में यह धूल के एक कण की तरह हवा में लटकी हुई है। सूरज जमीन से करोड़ों मील दूर है और दूसरे सितारे इससे भी ज्यादा दूर हैं।

ज्योतिषी या वे लोग जो सितारों के बारे में बहुत-सी बातें जानते हैं हमें बतलाते हैं कि बहुत दिन पहले हमारी जमीन और सारे ग्रह सूर्य ही में मिले हुए थे। आजकल की तरह उस समय भी सूरज जलती हुई धातु का निहायत गर्म गोला था। किसी वजह से सूरज के छोटे-छोटे टुकड़े उससे टूट कर हवा में निकल पड़े। लेकिन वे अपने पिता सूर्य से बिल्कुल अलग न हो सके। वे इस तरह सूर्य के इर्द-गिर्द चक्कर लगाने लगे, जैसे उनको किसी ने रस्सी से बाँध कर रखा हो। यह विचित्र शक्ति जिसकी मैंने रस्सी से मिसाल दी है, एक ऐसी ताकत है जो छोटी चीजों को बड़ी चीजों की तरफ खींचती है। यह वही ताकत है, जो वजनदार चीजों को जमीन पर गिरा देती है। हमारे पास जमीन ही सबसे भारी चीज है, इसी से वह हर एक चीज को अपनी तरफ खींच लेती है। इस तरह हमारी जमीन भी सूरज से निकल भागी थी। उस जमाने में यह बहुत गर्म रही होगी। इसके चारों तरफ की हवा भी बहुत गर्म रही होगी लेकिन सूरज से बहुत ही छोटी होने के कारण वह जल्द ठंडी होने लगी। सूरज की गर्मी भी दिन-दिन कम होती जा रही है लेकिन उसे बिल्कुल ठंडे हो जाने में लाखों बरस लगेंगे। जमीन के ठंडे होने में बहुत थोड़े दिन लगे। जब यह गर्म थी तब इस पर कोई जानदार चीज जैसे आदमी, जानवर, पौधा या पेड़ न रह सकते थे। सब चीजें जल जातीं होंगी।

जैसे सूरज का एक टुकड़ा टूट कर जमीन हो गया इसी तरह जमीन का एक टुकड़ा टूट कर निकल भागा और चाँद हो गया। बहुत-से लोगों का खयाल है कि चाँद के निकलने से जो गड्ढा हो गया वह अमरीका और जापान के बीच का प्रशांत सागर है। मगर जमीन को ठंडे होने में भी बहुत दिन लग गए। धीरे-धीरे जमीन की ऊपरी तह तो ज्यादा ठंडी हो गई लेकिन उसका भीतरी हिस्सा गर्म बना रहा। अब भी अगर तुम किसी कोयले की खान में घुसो, तो ज्यों-ज्यों तुम नीचे उतरोगी गर्मी बढ़ती जायगी। शायद अगर तुम बहुत दूर नीचे चली जाओ तो तुम्हें जमीन अंगारे की तरह मिलेगी। चाँद भी ठंडा होने लगा। वह जमीन से भी ज्यादा छोटा था इसलिए उसके ठंडे होने में जमीन से भी कम दिन लगे! तुम्हें उसकी ठंडक कितनी प्यारी मालूम होती है। उसे ठंडा चाँद ही कहते हैं। शायद वह बर्फ के पहाड़ों और बर्फ से ढके हुए मैदानों से भरा हुआ है।

जब जमीन ठंडी हो गई तो हवा में जितनी भाप थी वह जम कर पानी बन गई और शायद मेंघ बन कर बरस पड़ी। उस जमाने में बहुत ही ज्यादा पानी बरसा होगा। यह सब पानी जमीन के बड़े-बड़े गड्ढों में भर गया और इस तरह बड़े-बड़े समुद्र और सागर बन गए।

ज्यों-ज्यों जमीन ठंडी होती गई और समुद्र भी ठंडे होते गए त्यों-त्यों दोनों जानदार चीजों के रहने लायक होते गए।

अगले खत में मैं तुम्हें जानदार चीजों के पैदा होने का हाल लिखूँगा।

हांडला की आंगनबाड़ी में बच्चों की मौज

हांडला गांव की आंगनबाड़ी बड़ी मजेदार है। इसमें बच्चों के झूलने के लिए झूला है और खेलने के लिए बहुत सारे खिलौने। ये ऐसे खिलौने हैं जिनसे खेलकर बच्चे धीरे-धीरे सीखना शुरु कर देते हैं। इस आंगनबाड़ी केन्द्र पर सरोज कवंर कार्यकर्ता है। सरोज बताती हैं कि वह हर रोज आंगनबाड़ी खोलती हैं। यह आने वाले सभी बच्चों के साथ मिलकर वह गीत गाती हैं। इन गीतों में अंग्रेजी, हिंदी और गणित के शब्द और गिनती के साथ-साथ कोई न कोई कहानी मौजूद रहती है। आंगनबाड़ी में बच्चों के लिए ताजा पोषाहार भी दिया जाता है। इसे खाने से पहले सभी बच्चों के हाथ धुलवाये जाते हैं। जिन बच्चों के माता-पिता अपने बच्चे को आंगनबाड़ी नहीं भेजते, सरोज उन्हें आंगनबाड़ी के फायदे बताकर समझाती है। इसके अलावा वह गांव में बाल विवाह न कराने और सभी बालिकाओं को स्कूल भेजने की बात भी कहती हैं।

बाल मजदूरी से निकलकर करण और विजय पहुंचे स्कूल

भारत के दक्षिण भाग में स्थित एक सुदंर राज्य है, तमिलनाडु। समन्दर से लगे इस राज्य में मंदिरों का एक शहर है, जिसका नाम मदुरै है। इस शहर के पास ही एक छोटा सा कस्बा है कम्बॉब। करण और विजय दोनों भाई इसी कस्बे में स्थित बाल आश्रय गृह में रहते हैं। दोनों अब हर रोज स्कूल जाते हैं। नये दोस्तों के साथ खेलते हैं। मन लगाकर पढ़ते हैं। लेकिन पहले ऐसा नहीं था। उनकी इस नई जिंदगी का श्रेय जाता है बच्चों की हेल्पलाइन, ''चाइल्डलाइन-1098'' को। जिसने उन्हें बाल मजदूरी से मुक्त करा एक नई जिंदगी दी।

एक दिन एक व्यक्ति ने लालगढ़ रेलवे स्टेशन से उरमूल ट्रस्ट संचालित ''चाइल्डलाइन-1098'' को फोन पर सूचना दी कि दो बच्चे व्यक्ति के साथ बीकानेर भेज दिया। इडली-डोसा का ठेला लगाने वाला मालिक उनसे दिन-रात काम करवाता था। उन्हें पिटता भी था। एक दिन दोनो भाई मौका पाकर ठेले वाले के चंगुल से भाग निकले, और भटकते हुए स्टेशन पहुंच गए।

चाइल्डलाइन ने दोनो बच्चों को बीकानेर बाल कल्याण समिति के सामने पेश किया। जहां से उन्हें किशोर गृह में आश्रय दिलाया गया। बीकानेर चाइल्डलाइन ने उनकी फोटो खींच उनके परिवार के बारे में सारी जानकारी लिखकर, कम्बॉब कस्बे की चाइल्डलाइन को भेज दी। बाल कल्याण समिति को भी ढेले मालिक के खिलाफ कानूनी कार्यवाही के लिए पत्र लिखा गया।

कुछ ही दिनों बाद कम्बॉब चाइल्डलाइन ने बीकानेर चाइल्डलाइन को

रेलवे स्टेशन पर रोते हुए भटक रहे हैं। चाइल्डलाइन की टीम तुरंत रेलवे स्टेशन पहुंच गई। उन्होंने दोनों बच्चों को अपने संरक्षण में ले लिया। दोनों को चाइल्डलाइन के ऑफिस में लाया गया।

सबसे पहले हाथ-मुंह धुलवाकर दोनों को नाशता कराया गया। इसी दौरान चाइल्डलाइन की टीम ने उनसे दोस्ती कर ली। दोनों से उनके बारे में पूछा गया तो उन्होंने बताया कि, वे कम्बॉब कस्बे के रहने वाले हैं। उनके माता-पिता बहुत गरीब हैं, इसलिए उनका दाखिला स्कूल में नहीं कराया गया। माता-पिता ने उन्हें इडली-डोसा बनाने वाले एक

बताया कि उनके माता-पिता का पता चल गया है। दोनों को कम्बॉब ले जाया गया। जहां उन्हें, उनके माता-पिता से मिलाया गया। दोनों के माता-पिता ने उनकी पढ़ाई के लिए कम्बॉब चाइल्डलाइन से कहा। जिसके बाद कम्बाब चाइल्डलाइन ने कम्बॉब स्थित बाल कल्याण समिति को पत्र लिख उन्हें कम्बॉब स्थित किशोर गृह में रहकर पढ़ाई करने का निवेदन किया गया। बाल कल्याण समिति ने उनका निवेदन स्वीकार किया और इस तरह अब दोनो कम्बॉब स्थित किशोर गृह में रहकर पढ़ाई कर रहे हैं। अगर आपको भी कहीं बाल मजदूरी का पता चले तो चाइल्डलाइन के नंबर 1098 पर जरुर फोन करें।

URMUL SEEMANT

संपादन - विपिन उपाध्याय, रवि मिश्रा।
संपादन सहयोग - ज्ञानेंद्र श्रीमाली, सुनील लहरी, रवि चतुर्वेदी। मुद्रक-अरोडा प्रिंटर्स, बीकानेर
उरमूल सीमांत समिति के लिए प्लान इंडिया के सहयोग से उरमूल ट्रस्ट द्वारा प्रकाशित। निजी वितरण हेतु।
उरमूल सीमांत समिति, पावर ग्रिड के पास, बज्जू, ब्लॉक- कोलायत, बीकानेर - 334305, फोन : 01535-232034
बीकानेर में सपंर्कः उरमूल ट्रस्ट, उरमूल भवन। बीकानेर-334001 फोन : 0151-2523093, mail@urmul.org

Plan